

गांधीजी के

आध्यात्मिक उत्तराधिकारी

मेरी प्रार्थना है कि अब देने का ज़माना आया है। यह ईश्वरीय प्रेरणा है। आप सब लोग दिल खोलकर दीजिए। भूमिदान, सम्पत्तिदान, बुद्धिदान, श्रमदान जो कुछ भी दे सकें दीजिए। देने से एक दैवी सम्पत्ति प्रकट होती है। उसके सामने आसुरी सम्पत्ति टिक नहीं सकती।

दान देने में भ्रातृभाव की, मैत्री की भावना प्रकट होती है। जहां दूसरों की फ़िक्र की भावना जागती रहती है, वहां सख्त्व [illegible] है, [illegible] वैरभाव टिक नहीं सकता। पुण्य में [illegible] है, पाप में कोई ताक़त नहीं होती। प्रकाश में शक्ति होती है, [illegible] अंधकार में कोई शक्ति नहीं होती।

यह भूदान-यज्ञ जीवन-परिवर्तन का प्रयोग है। यदि हमारी समाज-रचना में फौरन परिवर्तन नहीं होता है तो हम सब नष्ट हो जायँगे। अतएव समय रहते चेत जाइये।

विनोबा।

नम्र निवेदन

आज से पांच वर्ष पूर्व जब मने गांधी चित्रावली का प्रकाशन किया था उसी समय से यह विचार मेरे मन में था कि यदि देश के अन्य महापुरुषों के जीवन की झांकियां भी चित्रों द्वारा सस्ते मूल्य में निकाली जावें तो सामान्य स्थिति के पाठकों के लिये बड़ी लाभदायक और प्रेरणात्मक होंगी।

विनोबा युग-पुरुष हैं। उनकी साधना महान है। वे गांधीजी के निष्ठावान अनुयायी रहे हैं। उन्हें गांधीजी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। दीर्घकाल से वे एकान्त साधना में लीन थे। अब तीन-चार वर्ष से वे प्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में आ गये हैं और इस अल्पकाल में ही उन्होंने भारत के नगरों और गांवों में एक नवीन चेतना, एक नवीन जागृति उत्पन्न कर दी है। सारा भारत आज उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। मेरा विचार था कि 'गांधी-चित्रावली' की भांति इस पुस्तक में विनोबा जी के बाल्यकाल से अब तक के चित्र यथाक्रम दिये जाते, लेकिन विनोबाजी प्रारम्भ से ही इतने एकान्तवासी रहे हैं कि उनकी विभिन्न अवस्थाओं और कार्यों के चित्र बहुत खोजने पर भी नहीं मिलते, अतः भूदान-यज्ञ की यात्रा में अनेक स्थानों पर जो चित्र लिये गये हैं, उन्हीं में से सर्वोत्तम चित्र इस पुस्तक में एकत्र किये गये हैं। इस संग्रह में कर्मयोगी, चिंतक, ऋषि, श्रम-प्रतिष्ठापक, भूदान-यज्ञ के महान प्रवर्तक आदि अनेक रूपों में विनोबा जी के जीवन की मनोहर झांकियां पाठकों को देखने को मिलेंगी। चित्रों के अलावा अन्त में विनोबा जी की संक्षिप्त जीवनी, उनकी सुबह शाम की प्रार्थना, उनके चुने हुए विचारों का संकलन भी दिया गया है।

लगभग एक वर्ष के परिश्रम से यह पुस्तक तैयार हो सकी है। इसके लिये मुझे हैदराबाद से लेकर बिहार प्रान्त तक के लम्बे प्रदेश की यात्रा करनी पड़ी है और काफ़ी खर्च करना पड़ा है। फिर भी इसका मूल्य मैंने काफ़ी सस्ता रखा है ताकि यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय परिवार में पहुंच जाय।

इस पुस्तक की तैयारी में भाई यशपाल जी जैन व भाई मार्तंड जी उपाध्याय से बड़ा सहयोग मिला है, इसके लिये मैं उनका बड़ा आभार मानता हूँ। इसके अलावा श्री गौतम जी बजाज ने अपने संग्रह में से लगभग २५ चित्र, वीरेन्द्रजी जैन ने १० चित्र तथा 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने १० चित्र तथा कई अन्य सज्जनों ने एक एक दो दो चित्र देकर इसके संकलन में सहायता दी है, उसके लिये मैं उन सब का बड़ा अनुग्रहीत हूं।

निवेदक—जीतमल लूणिया।

विशेष रियायत—पोस्टेज खर्च माफ़

आजकल पोस्टेज खर्च बहुत बढ़ गया है। चाहे एक पुस्तक मंगावें, चाहे अधिक सात आने वी. पी. रजिस्ट्री खर्च तो लगता ही है इसके अलावा वजन के अनुसार प्रति पांच तोले एक आना पोस्टेज खर्च और लगता है। इस तरह एक दो पुस्तकें मंगाने में काफी खर्च पड़ जाता है। हमारे यहां से अब तक (१) गांधी चित्रावली (जन्म से लगा कर मृत्यु समय तक के लगभग १०० चित्र, जीवनी, आदि अनेक बातों का संग्रह) मूल्य १), (२) राम नाम की महिमा (लेखक महात्मा गांधी) मूल्य १), (३) नेहरू चित्रावली (पं. जवाहरलाल जी नेहरू के जन्म से लगा कर अब तक के ८६ चित्र तथा जीवनी) मूल्य १) (४) विनोबा चित्रावली (यह पुस्तक तो आपके हाथ में ी है) मूल्य ।।।) (५) तपोधन विनोबा (लेखक—श्री बाबूराव जोशी एम. ए.—बड़ी खोज के साथ यह बड़ी जीवनी प्रामाणिक रूप से लिखी गई है—अभी तक ऐसी जीवनी नहीं निकली) मूल्य १।।), (६) स्कूल में फल बाग (बहुत कम खर्च में फलों का बगीचा लगाने की विधि) मूल्य १।।।) ये छै पुस्तकें निकली हैं। इनके अलावा पूज्य विनोबाजी व गांधीजी की सब पुस्तकें तथा सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली की सब पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं। इनके नाम व मूल्य कवर के अंतिम पृष्ठ में छपे हैं। आप इन सब पुस्तकों में से कम से कम १०) रु० की पुस्तकें एक साथ मंगावेंगे तो पोस्टेज खर्च आपको माफ़ होगा। किसी एक पुस्तक की आप अधिक प्रतियां भी मंगा सकते हैं।



(२)

कर्मयोगी

"ग़रीब और अमीर में एकता लाने की सामर्थ्य जितनी चरखे में है, उतनी और किसी में नहीं है" —विनोबा

(६) अध्ययन

(७) चिन्तन





स्वाध्याय में लीन



(१०) स्वावलम्बन और शरीर-श्रम का आदर्श

विनोबाजी अपना विस्तर अपने सिर पर लेकर चलने की तैयारी में
ताईजी, मृदुला व दूसरे साथियों ने भी अपना-अपना
सामान साथ में ले लिया है ।



(११) दरिद्र-नारायण के घर में

विनोबाजी गरीबों के घरों में जाकर उनके सुख-दुःख की बातें सुन रहे हैं



(१२)

तैलंगाना प्रदेश की यात्रा

भूदान-यज्ञ का प्रारम्भ तैलंगाना प्रान्त के पोचमपल्ली ग्राम में हुआ था



(१३) तैलंगाना के पहाड़ी इलाके में कार्यकर्त्ताओं के बीच में



नदी पार कर रहे हैं

(१५)

प्रातःकाल ठीक चार बजे यात्रा का प्रारम्भ
सुबह की प्रार्थना चलते हुए करते जाते हैं

(१६)

जंगलों के बीच
विनोबाजी के सहायक मंत्री लक्ष्मीनारायण भारतीय हाथ में लालटेन लि

(१७) मैदान में

विनोबाजी बड़ी तेजी से चल रहे हैं

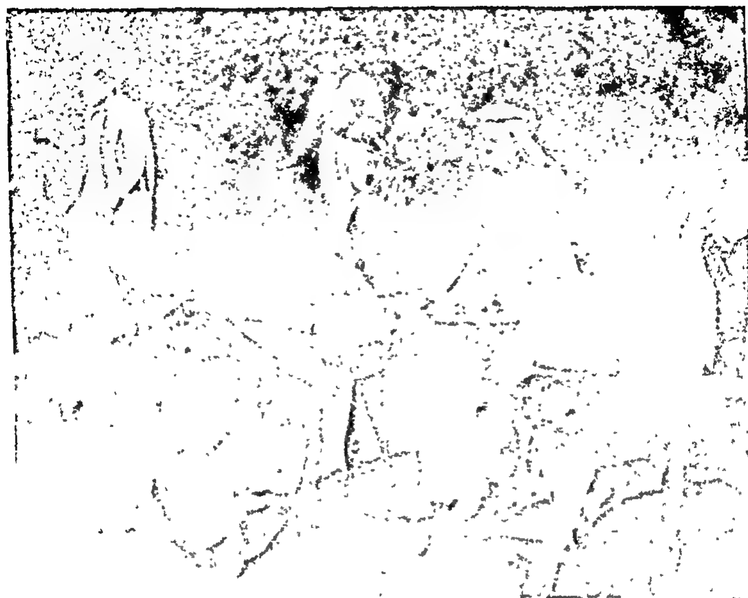
(१८) रास्ते में नाश्ता (जलपान)



(१९) हर समय एक ही धुन, एक ही ध्यान

(२०) पैर में चोट, फिर भी रुकना कैसा

(२१) चोट लग जाने से कुर्सी पर यात्रा



(२२) बैलगाड़ी में



(२३) नाव पर



(२४) **फिर वही अखंड पैदल यात्रा**

"जबतक मैं कामयाब नहीं होता, तबतक मैं हारूँगा नहीं"

(२५) **बाल-गोपालों के बीच**

गांव के बच्चों ने, विनोबाजी को घेर लिया है। वे भी पैदल यात्रा में साथ दे रहे है



गांव में प्रवेश
दाईं ओर महादेवी ताई और बाईं ओर

(२७) दैनिक यात्रा की समाप्ति पर



(२८) गांव में आते ही लोगों को भूदान-यज्ञ का सन्देश
कभी बैठकर, कभी खड़े होकर, कभी लाठी के सहारे चलते हुए.



(२९) हाथ-मुंह धोते हुए



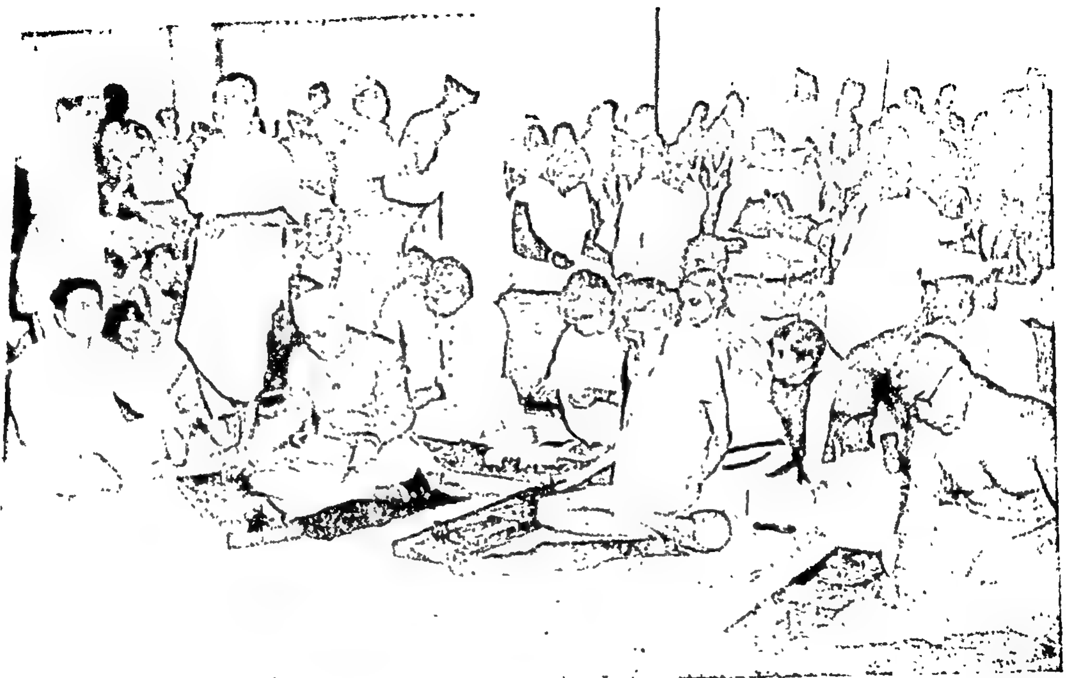
(३०) स्नान करते हुए

(३१) विश्राम के समय भी वही वातवीत, वही चिंतन

([illegible]) रचनात्मक कार्यकर्ताओं से बातचीत

दोपहर को थोड़ा आराम

आई हुई डाक देख रहे हैं



राजघाट पर चरखा-यज्ञ

[विनोबाजी के दाईं ओर पं० जवाहरलाल नेहरू व बाईं ओर श्री शंकरराव देव चरखा चला रहे हैं



२)



(६१) चरखा-यज्ञ के बाद फिर वही भूदान-यज्ञ का उपदेश

[illegible] के लिए [illegible] देना ही चाहिए। भूमिदान, सम्पत्तिदान, बुद्धिदान, सब ईश्वर की स्तुति है



(४७) "लाओ मेरा हिस्सा"
एक ज़मींदार से विनोबाजी का प्रेमपूर्ण अनुरोध

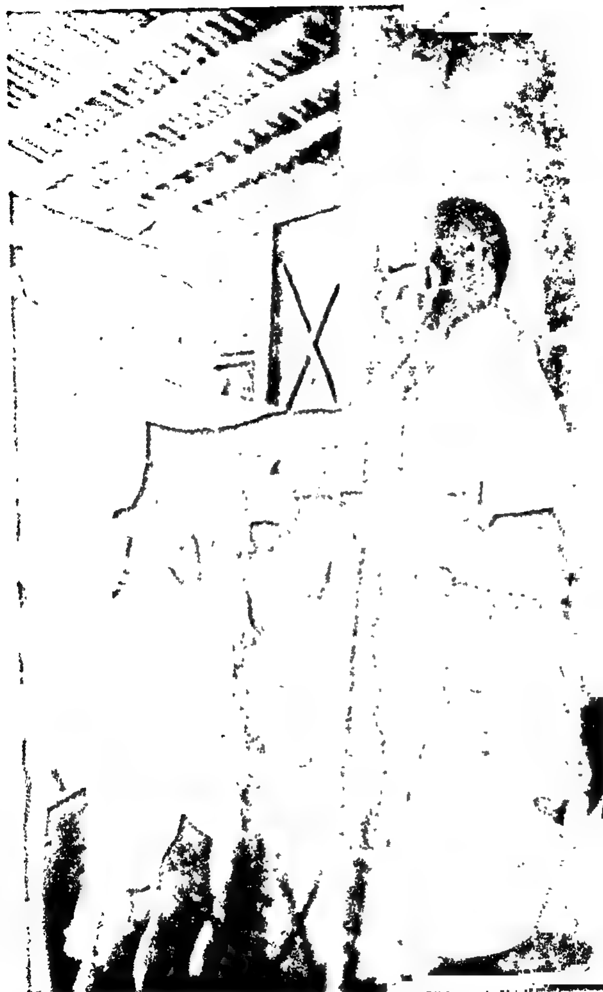
(४८) "लाओ भाई, आप भी दो"
एक दूसरे बड़े जमींदार से विनोबाजी का [illegible]



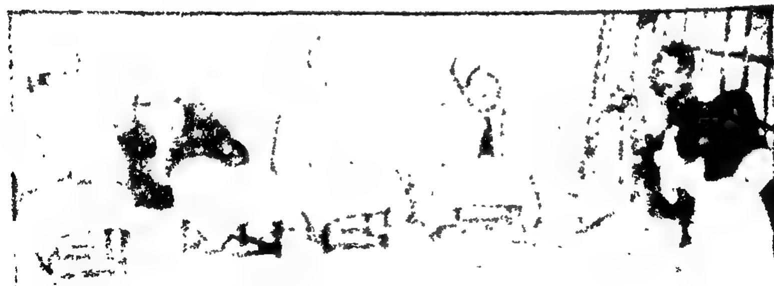


(४८) प्रार्थना में तल्लीन विनोबा—सायंकालीन प्रार्थना तथा प्रवचन का दृश्य

विनोबाजी प्रतिदिन शाम को गांधीजी की तरह सामूहिक प्रार्थना करते हैं। हजारों की भीड़ उसमें भाग लेती है



भारत की दो विभूतियाँ : विनोबा व नेहरू







(५८) **भूदान-यज्ञ की अद्‌भुत ईश्वरीय प्रेरणा**

११ सितम्बर सन् १९५२ को काशी विद्यापीठ में श्री विनोवाजी ने यह संकल्प किया कि जबतक भूमिदान यज्ञ का प्रश्न हल नहीं होगा मैं अपने आश्रम में नहीं जाऊंगा। विलक्षण संयोग की बात है कि इसी तारीख को हिमाचल प्रदेश के रोहडू ग्राम में महंत ऊधोदासजी ने अपनी एक लाख की सारी सम्पत्ति और ५००० बीघा ज़मीन विनोवाजी को अर्पित कर देने की घोषणा की। इससे पहले दोनों में से कोई भी एक-दूसरे से नहीं मिले थे।

आज भी ईश्वरीय प्रेरणा से बड़े-बड़े ज़मींदार व धनाढ्य अपनी सम्पत्ति ग़रीबों के लिए स्वेच्छा से विनोवाजी को भेंट कर रहे हैं।



(५९) विनोवाजी का आश्रम जो उनकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहा है।



संत विनोबा

(जीवनी, प्रार्थना, दिव्य वाणी आदि अनेक बातों का संग्रह)

संत विनोबा

भारत भूमि सदा से ही ऐसे महापुरुषों की जननी रही है, जिन्होंने भारत को ही नहीं अपितु समस्त विश्व को अपनी ज्ञान-ज्योति से सन्मार्ग दिखलाया है। पूज्य महात्मा गांधी उन्हीं महापुरुषों में से एक थे। स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि ब्रिटिश साम्राज्य जैसे शक्तिशाली राज्य से लोहा लेकर भारत इतनी जल्दी स्वाधीन हो सकेगा। पर गांधीजी ने असंभव को संभव करके दिखला दिया। उनका अंतिम आदर्श तो भारत में रामराज्य स्थापित करने का था, पर दुर्भाग्य से वे समय के पहिले ही चल बसे। उनकी मृत्यु के बाद कोई ऐसा महापुरुष नहीं दिखता था, जो उस काम को पूरा कर सके। पर कुछ दिनों बाद ही उनके परम अनुयायी संत विनोबा अपने एकान्तवास से बाहर आये और जिस प्रकार सूर्य की एक किरण संसार को प्रकाशमान कर देती है, उसी प्रकार उन्होंने थोड़े ही समय में ही भारत के नगरों और गाँवों में एक नवीन चेतना, एक नवीन जागृति उत्पन्न करदी। सारा भारत आज उनकी ओर आशाभरी दृष्टि से देख रहा है। भारत ही क्यों, संसार के अन्य देशों को भी उनके द्वारा उठाये गये क्रांतिकारी क़दम में बड़ी संभावनायें दिखाई देती हैं।

आज विनोबा देश के कोने-कोने में अलख जगाते घूम रहे हैं। हजारों मील की यात्रा कर चुके हैं। उनकी भूमिहीनों के लिए भूमि की मांग तो एक निमित्त मात्र है। वास्तव में वे अपने इस क़दम के द्वारा अहिंसक क्रांति करने निकले हैं और उसी का घर-घर गांव-गांव, नगर-नगर शंखनाद करते हुए मुट्ठीभर साथियों के साथ घूम रहे हैं। नाम की उन्हें चाह नहीं, प्रचार की उन्हें चिन्ता नहीं, आलोचना की उन्हें परवाह नहीं। चिन्ता है तो बस एक ओर वह

जन्म और बाल्यकाल

शंभुरावजी के तीन पुत्र हुए, जिनमें सबसे बड़े का नाम नरहरपंत था। ये बड़े बुद्धिमान और तेजस्वी थे। ये बड़ौदा में सरकारी दफ़्तर में काम करते थे। इनकी पत्नी का नाम रखुमाई था। इन्हीं की कोख से ११ सितंबर सन् १८९५ को विनोबा का जन्म गागोदा गांव में हुआ। विनोबाजी का बाल्यकाल गागोदा में ही व्यतीत हुआ और यहीं पर सन् १९०१ में छः वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। प्रारंभ में घर पर ही उन्हें धार्मिक शिक्षा दी गई और मराठी का लिखना-पढ़ना सिखाया गया।

विद्यार्थी जीवन

९ वर्ष की अवस्था में वे अपने पिता के पास बड़ौदा में आ गये और तीसरी कक्षा में भरती हुए। शुरू से ही वे बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे। छटी कक्षा में पहले नम्बर पर पास हुए। सन् १९१४ में मैट्रिक की परीक्षा में बैठे और पास हो गये। इसके बाद कालेज में भर्ती हुए। एक वर्ष तो पूरा किया, पर दूसरे वर्ष में इनका जी ऊब गया। उन्हें इस शिक्षा में कोई सार दिखाई न दिया। अतः बिना कोई डिग्री लिये सन् १९१६ में उन्होंने कालेज छोड़ दिया।

एक दिन की बात है कि जब मां रोटी बना रही थी, वे चूल्हे के पास जा बैठे और हाथ के कागजों को मोड़-मोड़ कर जलाने लगे। मां ने कहा—"विन्या, यह क्या कर रहा है ?" उन्होंने उत्तर दिया—"अपने मेट्रिक आदि के सार्टिफिकेट जला रहा हूं। मैंने तय कर लिया है कि अब आगे नहीं पढ़ूंगा और न कोई नौकरी ही करूंगा।"

मां ने फिर कहा—"तू आगे भले ही मत पढ़ना, पर इन सार्टिफिकटों को तो रहने दिया होता। मालूम नहीं किस समय काम आ जावें।" विनोबा ने तत्काल उत्तर दिया "जब मैंने तय कर लिया है तो इन्हें रखकर क्या होगा ? यदि ये रहेंगे तो किसी न किसी दिन

पूछीं। गाँधीजी ने उन्हें बातचीत करने के लिए अपने पास बुलाया। वह अहमदाबाद गये, गांधीजी से मिले और वहां का आश्रम-जीवन देखकर बहुत ही प्रभावित हुए। इसके बाद गांधीजी की अनुमति से वे आश्रम में रहने लग गये और उनके अनन्य भक्त हो गये।

एक वर्ष की छुट्टी और पठन-पाठन

कुछ दिनों तक आश्रम में रहने के बाद उनकी इच्छा हुई कि संस्कृत का और अधिक अभ्यास करें। अतः उन्होंने गांधीजी से एक वर्ष की छुट्टी ली। छः महीने तक तो ब्रह्मसूत्र, उपनिषद, गीता, पातंजलि योगदर्शन आदि आदि ग्रन्थों का अभ्यास किया और शेष छः महिने महाराष्ट्र में गीता पर प्रवचन दिये। जिस दिन एक वर्ष की अवधि समाप्त हुई, ठीक उसी दिन वे आश्रम में लौट आये। विनोबा नाम गांधीजी का ही रखा हुआ है।

आश्रम-जीवन

आश्रम में विनोबाजी का जीवन बड़ा संयमी और कठोर था। प्रातःकाल से लेकर रात्रि को सोने के समय तक उनका सब काम बंधा था। वे आश्रमवालों के लिए खाना बनाते, आश्रम की सफ़ाई करते, नदी में से पानी लाकर पेड़ों को पिलाते और कताई-बुनाई का काम करते। यह सब काम वे ईश्वर की उपासना के रूप में प्रसन्न चित्त से करते थे। कुछ समय बाद पाखाना सफाई का काम भी आश्रम में शुरू किया गया। इसमें सबसे पहले विनोबाजी तथा उनके भाई बालकोबा ने हिस्सा लिया। यह काम भी उन्होंने महीनों तक बड़ी तन्मयता से किया।

कुछ समय तक गुजरात विद्यापीठ में शिक्षक की हैसियत से भी काम किया और आश्रम के कार्यालय के व्यवस्थापक भी रहे।

वर्धा में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना

सेठ जमनालालजी बजाज की बहुत दिनों से इच्छा थी कि वर्धा में भी

एक आश्रम स्थापित किया जाय। अतएव उनके अनुरोव से गांवीजी ने आश्रम स्थापित करने के लिए विनोवाजी को वर्वा भेज दिया। आश्रम का उद्देश्य मानव समाज की आजीवन सेवा करना था। उन्होंने आश्रम वासियों के लिए अहिंसा, सत्य आदि ११ व्रत निश्चित किये। इन व्रतों का वहाँ वड़ी कड़ाई से पालन होता था।

कई वर्षों तक विनोवाजी ने महिलाश्रम का भी काम संभाला। फिर वर्वा के पास नालवाड़ी गांव में आश्रम स्थापित किया। यहाँ उन्होंने कताई-वुनाई का खूव अभ्यास किया। कुछ समय तक तो वे नित्यप्रति आठ-आठ घंटे कताई-वुनाई का काम किया करते थे। इसके वाद पास के पोनार नामक गांव में वे चले गये और वहां अपना आश्रम स्थापित किया। इस तरह वर्वा या उसके पास रहकर उन्होंने पूरे तीस वर्ष तक कठोर तपस्या की।

जेल-यात्रा

सन् १९२३ में जव नागपुर में झण्डा-सत्याग्रह का आन्दोलन शुरु हुआ तो विनोवाजी ने भी उसमें प्रमुख भाग लिया और जेल गये, पर कुछ महीनों वाद ही सरकार ने समझौता कर लिया और सव लोगों को छोड़ दिया। विनोवाजी भी छूट गये। कुछ समय पश्चात् दक्षिण में व्हायकोम में मंदिरों में हरिजन-प्रवेश सत्याग्रह शुरु हुआ। गांवीजी ने वहां भी विनोवाजी को ही भेजा। इनके नेतृत्व में कई महीनों तक सत्याग्रह चलता रहा। अंत में इन्हें सफलता मिली और आज दक्षिण का हरेक मंदिर हरिजनों के लिए खुला है। सन् १९३० में विनोवाजी ने नमक-सत्याग्रह में भाग लिया और गिरफ्तार किये गये। इसी तरह सन् १९३१ और ३२ के आन्दोलन में भी जेल गये। सन् १९४० में जव व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरु हुआ तव गांवीजी ने विनोवाजी को पहला सत्याग्रही चुना। इस सत्याग्रह में विनोवाजी को तीन महीने की सजा हुई, पर छूटने के वाद ही उन्होंने फिर सत्याग्रह किया। फिर जेल भेज

दिये गये। वाद में छूटते ही फिर सत्याग्रह किया। इस तरह तीन वार जेल गये।

इसके वाद १९४२ में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू हुआ। पर विनोवाजी को सरकार ने ९ अगस्त को ही गिरफ़्तार कर लिया। फिर तीन वर्ष वाद सन् १९४५ में सरकार ने विनोवाजी को छोड़ा।

पौनार में कांचन-मुक्ति का प्रयोग

१९४५ में जेल से छूटने के वाद विनोवा पौनार के अपने परंधाम आश्रम में चले गये। इस वार दूसरे कामों के साथ-साथ उन्होंने भंगी का काम भी किया। पौनार से चार मील दूर सुरगाँव में रोज़ सुवह जाते, वहाँ के पाखाने व नालियां साफ़ करके आठ वजे वापस अपने आश्रम में आजाते। इस प्रकार जव तक गाँधीजी मौजूद थे तव तक वे रचनात्मक कार्य में निरंतर लगे रहे। गांधीजी के निधन के वाद देश में विषम स्थिति पैदा होगई। इसलिये उन्हें आश्रम से वाहर आना पड़ा। एक वर्ष तक देश में घूमे और विस्थापितों में शांति स्थापित करने के लिए प्रयत्न करते रहे। इसी दौरे में उन्हें अनुभव हुआ कि आज हमारी सारी समाज-व्यवस्था पर पैसे का प्रभुत्व छा गया है। रुपया वड़े से वड़ा अनर्थ करवा देता है, सत्य का मुंह वन्द कर देता है, इसलिए पैसे के जाल से मुक्त होने का उपाय करना चाहिए। इसके लिए उन्होंने अपने यहां प्रयोग शुरू किया। आश्रम में रहने वाले साथियों ने भी पूर्ण रूप से साथ देना स्वीकार किया। विनोवाजी अपने हाथ से आठ आठ, दस-दस घंटे कुदाली चलाते, हल जोतते। उनका कहना था कि हम अपने परिश्रम से कमाई हुई चीज़ ही का उपयोग करेंगे और उसी से जीवन निर्वाह करेंगे।

भूदान-यज्ञ की प्रेरणा, आरम्भ और विकास

सन् १९५१ में शिवरामपल्ली (हैदरावाद) में सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेने विनोवाजी पैदल गये। वर्धा से शिवरामपल्ली कोई ३०० मील

दूर है । विनोबाजी थोड़े से साथियों के साथ दस-दस, बारह-बारह मील रोज़ चलकर, लोगों को सर्वोदय का संदेश सुनाते हुए एक महीने में वहां पहुँचे । कुछ लोगों ने आग्रह किया कि वे इतनी दूर आये हैं तो तैलंगाना की हालत भी देखते जावें, जहां साम्यवादियों ने हिंसक प्रवृतियों से त्राहि-त्राहि मचा रक्खी थी । सैकड़ों लोग घरबार छोड़ कर चले गये थे । सम्मेलन की समाप्ति पर विनोबाजी वहाँ के दौरे पर निकल पड़े ।

उनका चौथा पड़ाव पोचमपल्ली नामक गांव में पड़ा । विनोबाजी गांव में घूमने निकले । वहां के हरिजन बहुत दुखी थे । उनके पास भूमि न थी और उन्हें दूसरों के यहां काम करने से जो मज़दूरी मिलती थी, उससे उनका पूरा पेट भी नहीं भर पाता था । उन्होंने विनोबाजी से कहा कि अगर हमें ज़मीन मिल जाय तो हम लोग अपने हाथ से उस पर खेती करेंगे । विनोबाजीने पूछा कि कितनी ज़मीन से काम चल जायगा । उन्होंने बताया कि अस्सी एकड़ काफ़ी होगी ।

दोपहर बाद जब गांव के लोग इकट्ठे हुए तो विनोबाजी ने अस्सी एकड़ की माँग उनके सामने रक्खी । माँग रखनी थी कि श्री रामचंद रेड्डी नामक एक सज्जन उठकर खड़े हुए और बड़ी विनम्रता के साथ बोले, "महाराज, यह लीजिये, मैं १०० एकड़ देता हूँ ।"

महज़ प्रेम के तकाज़े पर इतनी ज़मीन मिल जाना एक आश्चर्य की बात थी । विनोबाजी ने वह स्वीकार करली और यहीं से भूदान-यज्ञ की गंगा प्रवाहित हो गई । भूमि लोगों को सता कर या कानून के ज़ोर पर भी ली जा सकती थी; लेकिन वह शांति का रास्ता नहीं था । इसलिए विनोबाजी ने प्रेम का रास्ता अंगीकार किया । उन्होंने निश्चय किया कि वह भारत के गांव-गांव में घूमेंगे और प्रेम से भूमि इकट्ठी करेंगे । तैलंगाना में लगभग दस हज़ार एकड़ भूमि मिली । तैलंगाना से लौटकर विनोबा वर्धा आये और वहां कुछ दिन ठहर दिल्ली के लिए पैदल रवाना हो गये । रास्ते में भूमि मांगते हुए और लेते हुए दिल्ली

आये। ११ दिन वहां रहे और फिर उत्तर प्रदेश की यात्रा पर निकल पड़े। शुरू में उन्होंने भूमि की ही मांग की थी। वाद में उसमें हलन्दान कूप-दान, वैल-दान वुद्धिदान भी आ मिले। विनोवाजी की वाणी में किसी प्रकार का दवाव न था, झुंझलाहट न थी, था तो केवल प्रेम। वे नम्रता के साथ कहते थे कि आपके पांच वेटे हैं तो छटा मुझे मानलो और मेरा हिस्सा मुझे दे दो। उनका कहना है कि जिस प्रकार हवा, पानी, धूप पर किसी का अधिकार नहीं है, उसी प्रकार भूमि भी किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं हैं। वह ईश्वर की दी हुई चीज है। जो उस पर मेहनत करे, वही उसकी कमाई खाय।

लोग प्रेम से विनोवाजी की वात सुनने और उन्हें जमीन देने लगे। कुछ लोगों ने उनकी आलोचना भी की; लेकिन विनोवाजी ने उसकी चिंता न की और सूर्य की अखण्ड गति की भांति निरंतर अपने रास्ते पर आगे वढ़ते गये। उत्तर प्रदेश की यात्रा में खतौली नामक स्थान पर एक साइकिल वाले की असावधानी से उनके चोट आगई, फिर भी उनकी यात्रा रुकी नहीं। लोगों के विशेष आग्रह पर उन्होंने कुर्सी पर और वाद में वैलगाड़ी पर यात्रा करना स्वीकार कर लिया। उस समय भी वह जितना चल सकते थे, पैदल चलते रहे।

जैसे-जैसे विनोवाजी वढ़ते गये, लोगों का ध्यान उनके महान् कार्य की ओर आकर्षित होता गया। फिर तो भूदान-यज्ञ समितियां वनीं, उनके संयोजक नियुक्त हुए और भूदान का कार्य चारों ओर फैलने लगा। सेवापुरी के सर्वोदय सम्मेलन में उसने एक आंदोलनका रूप ग्रहण कर लिया और चांडिल के सम्मेलन में तो वह देश का स्वर वन गया।

उत्तर प्रदेश में विनोवाजी लगभग एक वर्ष रहे और कई लाख एकड़ भूमि उन्हें प्राप्त हुई। उत्तर प्रदेश के भ्रमण के वाद वे कुछ समय काशी ठहरे। फिर विहार की यात्रा पर निकल गये। आजकल वे विहार में घूम रहे हैं। अव तक उन्हें २४ लाख एकड़ से अधिक भूमि मिल गई है। वे चाहते हैं कि सन् १९५७ तक पांच करोड़ एकड़

भूमि के संग्रह का जो संकल्प किया है, वह पूरा हो जाय और उस समय तक उसका वितरण भी हो जाय।

उत्तर प्रदेश में उन्होंने एक नये दान का प्रारम्भ किया और वह था श्रमदान, यानि जिनके पास धरती नहीं है, वे अपने हाथ-पैर की मेहनत से धरती के तोड़ने आदि के काम में मदद करें। पटना से सम्पत्तिदान शुरू हुआ। विनोवाजी ने लोगों से कहा कि लोग अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग दें, और उनके अनुसार वे स्वयं ही खर्च करें।

इस प्रकार भूदान-यज्ञ निरंतर व्यापक होता जा रहा है। विनोवा कहते हैं कि इस यज्ञ के द्वारा मैं देश में सेवा के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना चाहता हूँ।

उनकी इच्छा है कि जिनके पास ज़मीन नहीं हैं, उन परिवारों को कम से कम खुश्क जमीन पाँच एकड़ तथा तर जमीन एक एकड़ अवश्य मिले। इसी निमित्त को लेकर वे प्रयत्न कर रहे है; पर उनका वास्तविक ध्येय तो देशकी जनशक्तिको रचनात्मक कामोंमें लगाने का है।

विनोवाजी के इस कदम से देश में एक नई हवा पैदा हो गई है। जिनके पास थोड़ी ज़मीन थी, उन्होंने भी बड़ी आत्मीयता के साथ उन्हें कुछ भाग दिया है। कहीं कहीं तो लोगों ने अपनी सारी की सारी ज़मीन उन्हें अर्पित करदी है। उन्हें लाख लाख एकड़ के भी दान मिले हैं और मंगरोठ के लोगों ने तो गांव का-गांव ही इस संत के चरणों में चढ़ा दिया था।

'जो दे उसका भी भला, जो न दे उसका भी भला' इस सिद्धाँत के अनुसार विनोवाजी सबकी मंगल कामना करते हुए अपने ध्येय की पूर्त्ति में लगे हैं। उन्होंने संकल्प किया है कि जब तक विहार में भूमि की समस्या हल नहीं हो जायगी, वे इस प्रदेश को नहीं छोड़ेंगे।

हम सबको चाहिए कि इस काम में उन्हें मदद दें। यह काम उनका नहीं है, देश का काम है। देश के ३५ करोड़ व्यक्तियों की भलाई का काम है।

विनोबाजी की दिनचर्या

प्राचीन भारत के ऋषि महर्षि तथा धर्मपरायण लोग ब्रह्ममुहूर्त में उठ जाया करते थे। यह समय ईश्वर-भजन, चिंतन, मनन और पठन के लिए सर्व श्रेष्ठ होता है।

विनोबाजी ठीक तीन बजे रात को उठ जाते हैं और शौचादि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर स्वाध्याय के लिए बैठ जाते हैं। जहां घडी में चार बजे कि वे आगे के लिए पैदल रवाना हो जाते हैं। उनके साथी भी उस समय तक तैय्यार हो जाते हैं।

रास्ते में चलते चलते ही प्रातःकाल की प्रार्थना होती है। प्रार्थना के बाद जिस किसी को विनोबाजी से बातचीत करनी होती है तो वे रास्ते में चलते चलते करते जाते हैं। इस वृद्धावस्था में भी विनोबाजी इतनी तेजी से चलते हैं कि कई नये साथी तो पीछे ही रह जाते हैं। प्रायः एक घंटे में उनकी तीन मील की चाल है।

रास्ते में जहां ६॥ बज जाते हैं, वहीं पर जंगल में ही सब साथी बैठ जाते हैं और साथ में लिया हुआ नाश्ता कर लेते हैं। विनोबाजी इस समय दूध, शहद मूंगफली, पिंडखजूर ऐसी ही चीजें लेते हैं। लगभग आधा घंटे बाद फिर यात्रा शुरु हो जाती है। रोजाना औसत दर्जे लगभग नो दस मील की यात्रा होजाती है। कभी कभी तो पंद्रह सोलह मील तक आगे का मुकाम होता है।

पहुंचने के स्थान से मील दो मील पहले ही सैंकडों और हजारों की संख्या में स्त्री और पुरुष उनके स्वागत के लिए आ पहुंचते हैं। विनोबाजी अपने स्थान पर पहुंचते ही हाथ पैर धोकर सभास्थान पर पहुंच जाते है और लोगों को अपना संदेश सुनाते हैं। इसके बाद थोड़ी देर विश्राम कर, आये हुए लोगों से बातचीत करते हैं।

इस तरह लगभग दस बज जाते हैं। इसके बाद स्नान करते हैं और आई हुई डाक तथा अखबार देखते है। बाद में दूध या दही या

फल ऐसी ही चीज़ें भोजन में लेते हैं और थोड़ा विश्राम करके आये हुए पत्रों का उत्तर लिखवाते हैं तथा लोगों से बतचीत करते हैं। इस तरह लगभग तीन बज जाते हैं।

तीन बजे गांव के सब लोग इकट्ठा हो जाते हैं और विनोबाजी का चर्खा-यज्ञ का कार्यक्रम शुरु होजाता है। आध घंटे तक कातने का कार्य क्रम रहता है और फिर विनोबाजी का उपदेश शुरु हो जाता है और इसी समय भूमिदान देने वाले लोग अपना अपना दानपत्र भर कर विनोबाजी को भेट करते हैं। इस समय का दृश्य बड़ा ही भव्य होता हैं। फिर सायंकाल के समय सामुहिक प्रार्थना होती है। इस समय भी विनोबाजी का प्रवचन होता है। इन सब कार्यक्रमों के साथ साथ विनोबाजी ने श्रमदान का भी कार्यक्रम रखा है। वे स्वयं, उनके साथी तथा और लोग जो चाहें, फावडे कुदाली लेकर गांव के पास की खराब ज़मीन को ठीक करते हैं। इस तरह सुबह से लेकर शाम तक विनोबाजी निरंतर कार्य में लगे रहते हैं। प्रार्थना के बाद कुछ स्वाध्याय करते हैं या आये हुए लोगों से बातचीत करते हैं। फिर रात के ८॥ बजे मौन ले लेते हैं और ९ बजे सो जाते हैं।

इस पुस्तक के पाठकों से विनीत प्रार्थना

पुस्तक के अंत मे भूमिदान और संम्पत्तिदान के नमूने छपे हुए हैं। आप अपनी श्रद्धानुसार इन्हें भर कर इस महायज्ञ में अवश्य ही अपना हिस्सा देवें। गाँधीजी व विनोबाजी की लिखी पुस्तकों की सूचि कवर पर छपी हुई है, स्वाध्याय और मनन के लिए उन्हें अवश्य पढें और उनका प्रचार करें।

विनीत—जीतमल लूणिया

पूज्य विनोबाजी द्वारा निर्धारित उपासना

सायंकाल की उपासना

१

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः

अर्जुन ने कहा—

१ स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे,
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता ?

श्री भगवान ने कहा—

२ मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो,
आप में आप हो तुष्ट, सो स्थितप्रज्ञ है तभी।

३ दुःख में जो अनुद्विग्न सुख में नित्य निःस्पृह,
वीत-राग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही।

४ जो शुभाशुभ को पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

५ कूर्म ज्यों निज अंगों को, इन्द्रियों को समेट ले—
सर्वशः विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

६ भोग तो छूट जाते हैं निराहारी मनुष्य के,
रस किन्तु नहीं जाता, जाता है आत्म-लाभ से।

७ यत्नयुक्त सुधी को भी इन्द्रियां ये प्रमत्त जो,
मन को हर लेती हैं अपने बल से हठात्।

८ इन्हें संयम से रोके मुझी में रत, युक्त हो,
इन्द्रियां जिसने जीतीं प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

९ भोग-चिन्तन होने से होता उत्पन्न संग है,
संग से काम होता है, काम से क्रोध भारत।

१० क्रोध से मोह होता है, मोह से स्मृतिविभ्रम,
उससे बुद्धि का नाश, बुद्धिनाश विनाश है।

११ राग-द्वेष-परित्यागी करे इन्द्रिय-कार्य जो,
स्वाधीन वृत्ति से पार्थ, पाता आत्म-प्रसाद सो।

१२ प्रसाद-युत होने से छूटते सब दुःख हैं,
होती प्रसन्नचेता की बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।

१३ नहीं बुद्धि अयोगी के, भावना उसमें कहाँ,
अभावन कहां शान्त, कैसे सुख अशान्त को।

१४ मन जो दौड़ता पीछे इन्द्रियों के विहार में—
खींचता जन की प्रज्ञा, जल में नाव वायु ज्यों।

१५ अतएव महावाहो, इन्द्रियों को समेट ले—
सर्वथा विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा।

१६ निशा जो सर्व भूतों की संयमी जाग वहाँ,
जागते जिसमें अन्य, वह तत्वज्ञ की निशा।

१७ नदी-नदों से भरता हुआ भी
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ,
त्यों काम सारे जिसमें समावें,
पाता वही शान्ति, न काम-कामी।

१८ सर्व-काम-परित्यागी विचरे नर निःस्पृह,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम शांन्ति सो।

१९ ब्राह्मीस्थिति यही पार्थ, इसे पाके न मोह है;
टिकती अन्त में भी है ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी।

२

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द विनायक सविता पावक तू॥
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू॥
वासुदेव गो-विश्व रूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू॥

३

राजा राम राम राम, सीता राम राम राम॥
राजा राम राम राम, सीता राम राम राम॥ धुन

४

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं॥

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

प्रातःकाल की उपासना

१

ॐ पूर्ण है वह पूर्ण है यह,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल,
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१ हरिः ॐ ईश का आवास यह सारा जगत्।
जो कुछ यहाँ जो कुछ उसी से व्याप्त है।
अतएव करके त्याग उसके नाम से।

तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धन की किसी के भी न रख तू वासना।

२ करते हुए ही कर्म इस संसार में,
शत वर्ष का जीवन हमारा इष्ट हो।
तुझ देहधारी के लिए पथ एक यह,
अतिरिक्त इससे दूसरा पथ है नहीं।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्म से,
उससे चिटकती मात्र फल की वासना।

३ मानी गई हैं योनियाँ जो आसुरी,
छाया हुआ जिनमें तिमिर घनघोर है,
मुड़ते उन्हीं की ओर मरकर वे मनुज,
जो आत्मघातक शत्रु आत्मज्ञान के।

४ चलता नहीं, फिरता नहीं, है एक ही,
वह आत्मतत्त्व सवेग मन से भी अधिक,
उसको कहीं भी देव धर पाते नहीं,
उनको कभी का वह स्वयं ही है धरे।
वह उन सभी को, दौड़ते जो जा रहे,
ठहरा हुआ भी छोड़ पीछे ही गया,
वह "है", तभी तो संचरित है प्राण यह,
जो कर रहा क्रीड़ा प्रकृति की गोद में।

५ वह चल रहा है और वह चलता नहीं,
वह दूर है फिर भी निरन्तर पास है।
भीतर सभी के वस रहा सर्वत्र ही,
बाहर सभी के है तदपि वह सर्वदा।

६ जब जो निरन्तर देखता है भूत सब,
आत्मस्थ ही हैं, और आत्मा दीखता।

सम्पूर्ण भूतों में जिसे, तब वह पुरुष,
ऊबा किसी के प्रति नहीं रहता कहीं।

७ ये सर्वभूत हुए जिसे हैं आत्ममय,
एकत्व का दर्शन निरन्तर जो करे,
तब उस दशा में उस सुधीजन के लिए,
कैसा कहां क्या मोह, कैसा शोक क्या ?

८ सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ सो
है बैठ जाता, प्राप्त कर लेता उसे—
जो तेज से परिपूर्ण है, अशरीर है,
यों मुक्त है तनु के व्रणादिक दोष से,
त्यों स्नायु आदिक देहगुण से भी रहित—
जो शुद्ध है, वेधा नहीं अघ ने जिसे।
वह क्रान्तदर्शी, कवि, वशी, व्यापक, स्वतंत्र,
सब अर्थ उसके सध गये हैं ठीक से,
सुस्थिर रहेंगे जो चिरन्तन काल में।

९ जो जन अविद्या में निरन्तर मग्न हैं,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में।
जो मनुज विद्या में सदा रममाण हैं,
वे और घन तमसान्ध में मानों धँसे।

१० वह आत्मतत्त्व विभिन्न विद्या से कथित,
एवं अविद्या से कथित है भिन्न वह।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना,
जिनसे हुआ उस तत्व का दर्शन हमें।

११ विद्या, अविद्या—इन उभय के साथ में
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को,

इसके सहारे तर अविद्या से मरण,
वे प्राप्त विद्या से अमृत करते सदा।
१२ जो मनुज करते हैं निरोध-उपासना,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्ध में।
जो जन सदैव विकास में रममाण हैं,
वे और घन तमसान्ध में मानों धंसे।
१३ वह आत्मतत्त्व विकास से है भिन्न ही
कहते उसे एवं विभिन्न निरोध से।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषों से सुना,
जिनसे हुआ उस तत्त्व का दर्शन हमें।
१४ ये जो विकास-निरोध,—इन दो के सहित
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञान को,
इसके सहारे मरण पैर निरोध से
पाते सदैव विकास के द्वारा अमृत।
१५ मुख आवरित है सत्य का उस पात्र से
जो हेममय है विश्व-पोषक हे प्रभो,
तुझ सत्यधर्मा के लिए वह आवरण
तू दूर कर, जिससे कि दर्शन कर सकूं।
१६ तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक एक है
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर रहा,
पालन सभी का हो रहा तुझसे प्रजा की भांति है।
निज पोषणादिक रश्मियां तू खोलकर मुझको दिखा,
फिर से दिखा एकत्र त्यों ही जोड़ करके तू उन्हें।
अब देखता हूँ रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम,
वह जो परात्पर पुरुष है, मैं हूँ वही।
१७ यह प्राण उस चेतन अमृतमय तत्व में
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो।

ले नाम ईश्वर का अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, उसका किया तू स्मरण कर।
संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह उसे।
१८ हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे तत्त्व जो जग में ग्रथित।
ले जा परम आनन्दमय की ओर तू
ऋजु मार्ग से, हमको कुटिल अघ से बचा।
फिर फिर विनय नत नम्र वचनों से तुझे
फिर फिर विनय नत नम्र वचनों से तुझे।

१ ॐ पूर्ण है वह पूर्ण है यह,
पूर्ण से निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्ण में से पूर्ण को यदि लें निकाल,
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

२ ॐ तत्सत् श्री नारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द विनायक सविता पावक तू॥
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू॥
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू॥

३ नारायण नारायण जय गोविन्द हरे।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥ धुन

४ अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं॥

भूदान-यज्ञ की प्रेरक घटनाएँ

भूदान-यज्ञ की यात्रा में कभी-कभी ऐसी हृदयस्पर्शी घटनाएँ सामने आती हैं, जिनकी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की जा सकती थी। यहाँ हम कुछ ऐसी ही घटनाएँ दे रहे हैं।

(१) विलक्षण हृदय-परिवर्तन

तेलंगाना के तंगडपल्ली नामक गाँव की बात है। वहाँ दो सगे भाई आपस में लड़ रहे थे और अदालत में हज़ारों रुपये बरबाद कर चुके थे। उन्हें लेकर गाँव में दो पक्ष बन गये थे। विनोबाजी वहाँ पहुँचे तो गाँववालों ने उन से कहा कि इन दोनों की लड़ाई के कारण सारा गाँव तबाह हो रहा है। विनोबाजी ने दोनों भाइयों की बातें सुनीं और प्रेम पूर्वक समझाया और पूछा "तुम दोनों कितने बरस और जीनेवाले हो"

"हमारा एक पाँव श्मशान में है और एक यहाँ" एक ने जवाब दिया। दूसरे भाई ने भी इसका समर्थन किया।

विनोबाजी ने कहा "फिर यह लड़ाई और यह तबाही किस लिए है"। दोनों ने उत्तर दिया कि आप जैसी आज्ञा देंगे वह हमें स्वीकार है विनोबाजी ने शाम की प्रार्थना के समय दोनों भाइयों को मंच पर बुलाया और उपस्थित लोगों को संबोधन करके कहा "ये दोनों भाई अबतक कौरव-पांडव थे। आज से इनके झगड़े मिट गये।"

दोनों भाइयों ने विनोबाजी को प्रणाम किया और मंच पर ही एक दूसरे से ऐसे गले मिले मानों वर्षों से बिछुड़े हुए मिले हों। अनन्तर उन्होंने नब्बे एकड़ ज़मीन का दान देकर गाँव की सेवा करने तथा राम लक्ष्मण की जोड़ी की तरह परस्पर प्रेम से रहने का वचन दिया। इससे उन दोनों भाइयों को तो हर्ष हुआ ही, सारा गाँव भी आनन्दित हो उठा।

(२) भगवान कृष्ण का दान

विनोबाजी का पड़ाव चौदहपुर गाँव में था। दिन भर अत्यन्त

व्यस्त रह कर रात को विनोबाजी सो गये। उनके साथी भी सो गये। क़रीब ११ बजे होंगे, बैलों के गले में बंधे हुए घूघरों की ज़ोरों से आवाज़ आने लगी। उस आवाज़ से एक साथी जागे और बाहर आकर देखा तो मालूम हुआ कि एक बैलगाड़ी खड़ी है जिसमें हांकने वाले के अलावा एक बूढ़ा आदमी और बैठा हुआ है।

विनोबाजी के साथी ने पूछा "आपका क्या नाम है और इतनी रात को कैसे आये हैं ?"

गाड़ी में बैठे हुए भाई ने कहा, "मेरा नाम रामचरण है, मैं आंखों से अन्धा हूँ। बहुत दूर से आ रहा हूँ। मैंने सुना था कि सन्त विनोबाजी जमीन का दान लेते हैं और ग़रीबों को बांटते हैं। इसलिए ऐसे संत को जमीन भेंट करने की मेरी भी इच्छा हुई क्योंकि ऐसे मोके जीवन में बार बार नहीं आते। मैं पहुँच तो जलदी ही जाता पर कारणवश देर हो गई। अब संत सोए हुए हैं, उन्हें उठाना ठीक नहीं और मुझे वापस सुबह अपने स्थान पर पहुँचना है। मेरे पास १२ बीघा ज़मीन है, वह मैं सब की सब देने आया हूँ। उसी समय रात को ही भूमिदान-पत्र भरा गया और उन्होंने उसपर अपना अंगूठा लगा दिया।

अगले दिन विनोबाजी ने जब अपने प्रवचन में इस घटना का उल्लेख किया तो उनकी वाणी रुक गई और आंखों से आंसू बह निकले। बड़ी कठिनाई से मुंह खुला तो बोले, "वह व्यक्ति और कोई नहीं रामचरण के रूप में कृष्ण भगवान ही थे जो गुप्त दान देकर चले गये।"

हमारे भारतीय संस्कृति में दान की बड़ी महिमा है, पवित्रता है। लेकिन ऐसे अद्भुत दान की पावनता शायद ही कहीं ढूंढ़े मिले।

(२) "अब दो होगये"

दिल्ली की बात है। विनोबाजी राजघाट पर कुटिया में ठहरे हुए थे। एक दिन रात को एक वयोवृद्ध सज्जन रजाई ओढ़े आये और बोले मेरे पास पैंसठ एकड़ भूमि है। दस एकड़ निकम्मी है, बाकी

अच्छी । विनोबाजी ने पूछा "तुम्हारे कितने लड़के हैं ?" उत्तर मिला "एक" तो "अब दो हो गये। दूसरे को उसका हक़ दे दो" विनोबाजी ने कहा।

"सारी ज़मीन आपके समर्पण है, जितनी चाहें, लेलें" "अच्छा साढे सत्ताईस एकड़ दे जाओ" विनोबाजी ने कहा । वह खुशी खुशी देकर चले गये ।

(४) विनोबा बाबा फकीर हैं

इन पंक्तियों का लेखक विनोबाजी से मिलने के लिए दादरी (उत्तर प्रदेश) जा रहा था । दिल्लीस्टेशन से बस में बैठा तो ड्राइवर से यों ही पूछ लिया "विनोबाजी दादरी पहुँच गए क्या ?"

"जी हां, सवेरे ही पहुँच गये" उसने उत्तर दिया ।

"क्योंजी, जोकुछ वे कर रहे हैं उस बारे में तुम्हारा क्या खयाल है ?"

ड्राइवर मुस्करा उठा ! बोला, "वे तो फ़कीर हैं। जो करें सो ठीक।"

"फ़कीर ! जो आदमी इतनी जमीन इकट्ठी कर रहा है, उसके लिए इतनी दौड़धूप कर रहा है, वह फ़कीर कैसा ? फ़कीर का काम तो कहीं एक जगह बैठ कर रामनाम जपना है ।"

ड्राइवर हँस पड़ा । बोला, "यह आपने खूब कही । विनोबा बाबा तो फ़कीर हैं, महात्मा हैं। कितनी मुसीबत उठा कर जमीन इकट्ठी कर रहे हैं । किसके लिये ? अपने लिए नहीं, ग़रीबों के लिए । जमीन का एक जर्रा भी अपने लिये नहीं रक्खेंगे, गांधी बाबा दूसरों के लिये जिए, ये भी वैसा ही कर रहे हैं ।"

(५) कुएं का दान

गाजियाबाद की बात है। विनोबाजी वहां की एक पाठशाला में ठहरे हुए थे । दोपहर के समय एक स्थानीय सज्जन सपरिवार उनसे मिलने आये । वहां के बड़े व्यापारी थे । सौ-सौ रुपये के कुछ नोट विनोबाजी के सामने बढ़ाते हुए बोले, "ये आपकी भेंट हैं ।"

विनोवाजी ने उनके चेहरे की तरफ़ देखा, फिर वोले, "मैं रुपये नहीं लेता। उसी का तो मुझे उच्छेद करना है। आप ज़मीन दीजिए।"

वे वोले, "ज़मीन तो हमारे पास नहीं है।"

"तो खरीद कर देदें उतना न हो तो कुंआ खुदवा दें, वैल खरीद दें।"

"अच्छी वात है आप जहाँ कहेंगे, एक पक्का कुंआ वनवा दूंगा।" कृतज्ञ-भाव से उन भाई ने कहा और दानपत्र भर कर विनोवाजी को प्रणाम करके चले गये।

(६) वृद्धा की भेंट

ठंड का मोसम था। नैनीताल ज़िले के एक गांव में विनोवाजी का पड़ाव था। विनोवाजी के मन्त्री दामोदरदासजी नियमानुसार सुवह तीन वजे उठे और केम्प से वाहर निकले तो क्या देखते हैं कि एक वूढ़ी माता सामने चवूतरे पर वैठी हुई है।

उन्होंने पूछा "माजी, आप कहां से आये हो।"

"वेटा, यहां से छै मील दूर कालाडूंगी गाँव से आई हूँ।"

"इतनी दूर से और ऐसी सरदी में इतने सवेरे कैसे आये"

वे वोली "आ तो मैं कल रात को ही गई थी लेकिन रात ज्यादा होगई थी, आप सव सोगये थे इसलिए नहीं जगाया।"

वे वोले "आप सारी रात ऐसी ठंड में वैठी रहीं, अव मैं आपकी क्या सेवा करूं सो वतावें।" वूढ़ी मां वोली "मेरे पास थोड़ी जमीन है, उसे मैं संतजी की सेवा में भेंट करने आई हूं। कागज लाओ सो मैं उस पर अंगूठा करदूं। फिर मुझे वापस जल्दी ही घर पहुँचना है।"

विनोवाजी ने दूसरे दिन प्रार्थना-सभा में कहा कि इस यज्ञ में कितनी ही शवरियों ने अपने वेर भेंट किये हैं, यह अहिंसात्मक क्रांति का साक्षात्कार है। वूढ़ी मां रात भर ठंड में वैठी रहीं, किसी से कुछ लेने के लिए नहीं परन्तु अपनी प्यारी सम्पत्ति का दान देने के लिये।

(७) शुभ सङ्कल्प और सत्कार्य का प्रभाव

एक गांव में विनोवाजी ठहरे थे। उनका सारा दिन वहाँ व्यतीत हुआ और अन्य स्थानों की तरह वहाँ शाम को प्रार्थना और उसके वाद प्रवचन भी हुआ। वहां से दिन भर में केवल चार एकड़ भूमि मिली। प्रवचन समाप्त करके विनोवाजी अपने स्थान पर गये और उपनिषद् का अध्ययन करने लगे। मुश्किल से दस मिनिट हुए होंगे कि एक भाई आये जो प्रार्थना में शामिल भी नहीं हुए थे और न उन्होंने प्रवचन ही सुने थे। वह आठ मील दूरी से आए थे और आकर विनोवाजी के पास वैठ गए। वे वोले "ज़मीन देने आया हूँ और अपनी छः एकड़ भूमि दे गए। थोड़ी देर के वाद ही दूसरे भाई आए। वे और भी दूर से चलकर आये थे। उन्होंने ५२ एकड़ भूमि दी।

शुभ संकल्प और सत्कार्य का प्रभाव किस प्रकार अदृश्य और व्यापक रूप से पड़ता है, उक्त घटना उसका एक उदाहरण है।

(८) दान किस लिए ?

देहरादून की वात है। दूर गाँव से एक किसान विनोवाजी के पास आया और ज़मीन देने की इच्छा प्रकट की। विनोवाजी के पूछने पर मालूम हुआ कि वह वहुत ही मामूली हैसियत का है और जैसे-तैसे अपनी गुज़र करता है। उसने चार वीघा ज़मीन का दान-पत्र भरकर दिया। विनोवाजी ने पूछा कि भाई इतनी ज़मीन क्यों दे रहे हो ? वह वोला, "आज चारों तरफ़ लोगों को लेने-लेने की ही पड़ी है। अदालत में रिश्वत, थाने में रिश्वत, वाज़ार में ठगी, जहां देखो वहीं धोखा देने की वात हो रही है। आज आप ही एक ऐसे मिले हैं जो ग़रीवों को देने की वात कहते हैं और लेने से देना ज्यादा ज़रूरी वताते हैं।"

उसकी वातें सुनकर सारी पार्टी आनन्द-विभोर हो उठी और विनोवाजी ने उस श्रद्धावान किसान के उस अल्प, पर महान दान को स्वीकार कर लिया।

(९) आड़े समय का त्याग

रामपुर की बात है। एक मामूली-सा आदमी विनोबाजी के पास आया।

"आप क्या करते हैं ?" विनोबाजी ने पूछा।

उसने उत्तर दिया—"मैं दुकान करता हूँ। मेरे पास थोड़ी सी ज़मीन है। उसमें से कुछ हिस्सा आपको देना चाहता हूँ।"

आगे प्रश्न पूछने पर मालूम हुआ कि थोड़े दिन पहले ही उसका मकान जल गया था और अभी उसको अपनी पांच लड़कियों की शादी भी करना है। अन्त में वह बोला, "लेकिन मुझसे भी बुरी हालत में बहुत से लोग रहते हैं, उनके लिये मैं अपनी ज़मीन में से १९ बीघा १० बिस्वा ज़मीन देने के लिये आया हूँ।"

हममें से अधिकांश व्यक्ति अपना ही लाभ और अपना ही स्वार्थ देखते हैं, विशेषकर जब स्वयं हमारी आवश्यकताएँ हमारे साधनों से अधिक होती हैं तो हमारी निगाह अपने स्वार्थ की सीमित परिधि से बाहर कदापि नहीं जातीं, लेकिन ऐसे आड़े समय में किये हुए त्याग और दिये हुए दान की बराबरी कौन कर सकता है !

(१०) समस्त भूमि का दान

गाज़ियाबाद की घटना है। एक बहिन विनोबाजी के पैर छूकर बैठ गई और बोली "मेरे पास साढ़े ग्यारह एकड़ ज़मीन है, वह आप ले लीजिए।"

विनोबाजी ने पूछा, "तुम्हारे पति क्या करते है ?"

"वकील है। उनकी कमाई से हमारी गुज़र अच्छी तरह से हो जाती है।"

"उनको क्यों नहीं लाई ?" विनोबाजी ने पूछा।

"उनके फोड़ा होगया है, नहीं तो वे स्वयं ही आते।"

सारी-की-सारी ज़मीन का दान ! विनोबाजी ने गम्भीर होकर उस बहिन की ओर देखा ! बहन बोली "जब वकालत की क

ही हमारा गुजारा होजाता है तो अधिक संग्रह करने से क्या लाभ है ? शास्त्रों में दान की बड़ी महिमा लिखी है। आप जैसे संतों के दर्शन बड़े पुण्य से होते है। अतः यह मेरी तुच्छ भेंट स्वीकार करें।" अंत में विनोबाजी ने उसका दान-पत्र स्वीकार करलिया।

सैंकड़ों-हजारों एकड़ भूमि में से कुछ एकड़ का दान दे देना आसान है लेकिन अपनी समस्त भूमि की ममता छोड़ देना आसान नहीं है। विनोबाजी को अपनी यात्रा में ऐसे दान एक दो नहीं, सैंकड़ों मिले हैं।

(११) अनुष्ठान की व्यापकता

उक्त घटना के बाद ही एक भाई दस गुण्डी सूत और एक सूत की माला लेकर आए। उन्होंने सूत की गुण्डियां विनोबाजी के सामने रख दीं और माला विनोबाजी को पहना दी। पैर छुए और जब वह पास में ही बैठे तो उनकी आंखें डबडबा रही थीं। बोले, "एक प्रार्थना है। मैं अहमदनगर से पैदल आ रहा हूं। आप वहां पधारें।"

विनोबाजी की सारी पार्टी ने स्तब्धभाव से उनकी ओर देखा।

"भूमि दोगे ?" विनोबाजी ने पूछा,

"वहां आपको इतनी जमीन मिलेगी कि आप संभाल भी नहीं पायंगे। इसीलिये मैं आपको निमन्त्रण देने आया हूं।"

विनोबाजी ने गद्‌गद् होकर कहा, "भगवान ने चाहा तो उधर आने का प्रयत्न करूँगा।" फिर पूछा, "आप कैसे जायेंगे।"

वह बोले "पैदल ही जाऊँगा।" एक निष्ठावान व्यक्ति की दृढ़ता और उसके ध्येय की पावनता कितनों को और कहां से खींच कर ले आती है, इसका कौन अनुमान कर सकता है।

(१२) श्रम-दान

गनौली में विनोबाजी का पड़ाव वहां के कालेज में था। सायंकालीन प्रार्थना के पहले कालेज के कुछ छात्र और अध्यापक विनोबाजी के पास आए। उन्होंने कहा, "हमारे पास भूमि नहीं है; पर आप जो

महान कार्य कर रहे हैं, उसमें हम आपकी सेवा करना चाहते हैं। बताइए, कैसे करें ?"

विनोवाजी ने कहा "आपके पास जमीन नहीं है तो मेरे विचारों को फैलाने में मदद कीजिए।" कह कर विनोवाजी थोड़े रुके जैसे उन्हें कोई नई बात सूझ गई हो, फिर वोले, "आप लोग श्रमदान भी कर सकते हैं।"

सब लोग आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। आखिर यह श्रमदान क्या चीज़ है ? विनोवाजी ने अपनी बात साफ़ करते हुए कहा, "जो ज़मीन मिलती है, उसको जोतना बोना होता है न ? आप लोग अपने शरीर से मेहनत करके जोतने-बोने में योग दे सकते हैं।"

एक नये दान का प्रारम्भ हुआ। विद्यार्थियों और अध्यापकों ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक तीन घंटे का श्रमदान समर्पित किया।

(१३) गांव-का-गांव समर्पित

हमीरपुर ज़िले के मांगरोठ नामक गाँव में एक ऐसी घटना हुई, जिसके आगे अन्य घटनाएँ फीकी पड़ जाती हैं। सन् ४२ के आन्दोलन में भी इस गाँव ने बड़ा हिस्सा लिया था। इस गाँव में १०४ कुटुम्बों की बस्ती है जिसमें ५० कुटुम्ब तो ज़मीन वाले थे और ५४ कुटुम्ब बिना ज़मीनवाले। सब लोग विनोवाजी का भाषण सुनने इकट्ठे हुए। विनोवाजी ने छोटा सा भाषण दिया और 'सबै भूमि गोपाल की' यह संदेशा लोगों को सुनाया। इस भाषण का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जो ५० कुटुम्ब ज़मीनवाले थे, उन्होंने अपनी सब ज़मीनें विनोवाजी को समर्पण करदीं और प्रार्थना की कि सब ज़मीन सब में बांट दें। इस प्रकार इस गांव के १०४ कुटुम्ब सब ज़मीनवाले होगये। सामुहिक दान का यह प्रथम और अपूर्व दृष्टान्त इस तरह इस गाव के सब लोग एक कुटुम्बवत् हो गये।

(१४) नौ वर्ष के बालक का अपूर्व भूमिदान

पंडित जवाहरलाल नेहरू के ६३वें जन्मदिन के अवसर पर एक नौ

वर्ष के बालक ने अपने पिता से कहा "आज के शुभ दिन पर कोई बड़े पुण्य का काम अपने को करना चाहिये"।

पिता भी धरमात्मा था, बोला, "बेटा, तुम कहो जैसा करें।"

बालक बोला "अपने गाव में विनोबा जैसे संत आये हैं, चलिये, उनको भूमि दान देवें" पिता भी इस विचार से सहमत हो गये और नेहरूजी की ६३वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में ६३ एकड़ भूमि विनोबाजी को समर्पण करदी।

(१५) दो बीघा ज़मीन दो लाख के समान

बरहज जाते हुए विनोबाजी अपने सहयात्री श्री हरीशभाई के गांव पांच मिनट के लिए रुके। हरीश की माताजी गांव की अन्य स्त्रियों के साथ मंगल गीत गाती हुई आगे आई और विनोबाजी को प्रणाम किया। विनोबाजी के दर्शन कर वे इतनी आनन्दित हुई कि कुछ बोलना चाहती थीं पर बोल नहीं पारही थीं। अंत में वे बोलीं "हमारे पास बारह बीघा कुल जमीन है। घर में पांच आदमी हैं। आप छठे हुए, आप के हिस्से का दो बीघा स्वीकार करें।"

शाम को विनोबाजी ने प्रार्थना-प्रवचन में कहा "माताजी का दो बीघे का दान दो लाख के समान है। माताजी का मेरे लिए यह आशीर्वाद है।"

(१६) तपस्वी भारत की आत्मा गरीबों में झलक रही है

विनोबाजी के सामान की गाड़ी के साथ एक हरिजन भाई रास्ता दिखाने के लिए साथ में चल रहे थे। उनके हृदय में भी दान देने की भावना जागृत हुई। वह विनोबाजी से बोला "हम घर में बारह आदमी हैं, पांच बीघा जमीन है। जमीन की आमदनी के अलावा महनत मजदूरी करके पेट भर लेते हैं। अब इसमें से एक बीघा जमीन भेंट करता हूँ" विनोबाजी ने बहुत समझाया पर वह नहीं माना। अंत में उसके संतोष के लिए कुछ डेसीमल जमीन विनोबाजी ने स्वीकार की।

ये त्याग के प्रत्यक्ष उदाहरण प्राचीन तपस्वी भारत की याद दिलाते हैं।

संत विनोबाजी की दिव्य वाणी

ईश्वर और हम दोनों एक ही चैतन्य के रूप हैं। हम अंश मात्र हैं, ईश्वर उस चैतन्य का पूर्ण रूप है। तो भी चैतन्य तो एक ही है। अतः जो उसकी शक्ति है, वही हमारी है। इसलिए ईश्वर से शक्ति मांगने व प्राप्त करने में पराधीनता नहीं है।

× × × ×

परीक्षा पास होने के लिए ईश्वर से सहायता मांगना कौनसी आस्तिकता है ? यह तो कमअकली है, पुरुषार्थ-हीनता है। खेत में फसल नहीं आई—करो ईश्वर से प्रार्थना, मांगो ईश्वर से मदद। मानो इन सब प्रश्नों को हल करने की शक्ति हमें ईश्वर ने दी ही नहीं। ये ईश्वर की सहायता के विषय नहीं हैं। सकाम भावना से बाह्य कार्यों में ईश्वर की मदद मांगना हमें शोभा नहीं देता है।

× × × ×

चाकू से पेंसिल छीलना चाकू इस्तेमाल करनो है। अंगुली पर चला कर हाथ ही छील लेना चाकू के आधीन हो जाना है। इन्द्रियों का उपयोग भगवान की सेवा में करना चाकू से पेंसिल छीलने जैसा है, परन्तु उनके वश में होकर बुद्धिनाश कर लेना चाकू से अंगुली काट लेना है।

× × × ×

मां अपने बच्चे को प्रेम से सजाती है, गहने-कपड़े पहनाती है, अतः वह उसको सुन्दर दिखाई देता है। इसी तरह आत्मभावना से विश्व को सजाओ, चमकाओ, मण्डित करो, आच्छादित करो और फिर देखो। आत्मीयता के कारण वह सुन्दर और प्रिय दिखाई देगा।

× × × ×

"जो आज तक नहीं हुआ वह आगे भी नहीं होने का।" यह बूढ़ा तर्क है। मालूम नहीं इन बूढ़ों को यह क्यों नहीं समझ पड़ता कि जो आज तक नहीं हुई, ऐसी बहुतसी बातें आगे होनेवाली हैं।

× × × ×

त्याग से पाप का मूल धन चुकता है, दान से उसका व्याज। त्याग का स्वभाव दयालु है, दान का ममतामय। धर्म दोनों ही पूर्ण है। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान का उसकी तलहटी में

× × × ×

त्याग को प्रतीति त्याग को मार डालती है। त्याग करके हम किसी पर अहसान नहीं करते ।

× × × ×

गीता जवानी जमाखर्च का शास्त्र नहीं है, किन्तु आचरण का शास्त्र है। गीता के प्रचार का अर्थ है, निष्काम-कर्म का प्रचार। गीता के प्रचार का अर्थ है, त्याग का प्रचार, गीता के प्रचार के मानी है शक्ति का प्रचार। यह प्रचार पहले अपनी आत्मा में होना चाहिए। जिस दिन उससे आत्मा परिपूर्ण होकर बहने लगेगी उस दिन वह दुनिया में फैले बिना न रहेगा ।

× × × ×

बम या युद्ध टालने का वास्तविक इलाज तो यही है कि हम अपनी आवश्यकता की चीजें अपने आसपास तैयार कराएं और उनके उचित दाम दें।

× × × ×

शरीरश्रम को दुःख क्यों मान लिया है, यह मेरी समझ में नहीं आता। आनन्द और सुख का जो साधन है उसी को कष्ट माना जाता है।

× × × ×

एक आदमी ने मुझसे कहा—गांधीजी ने पीसना, कातना, जूते बनाना वगैरा काम खुद करके परिश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। मैंने कहा—"मैं ऐसा नहीं मानता। परिश्रम की प्रतिष्ठा किसी महात्मा ने नहीं बढ़ाई। परिश्रम की निज की प्रतिष्ठा इतनी है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी।" आज भारत में गोपाल कृष्ण (भगवान कृष्ण) की जो इतनी प्रतिष्ठा है वह उनके गोपालन ने उन्हें दी है। उद्योग हमारा गुरुदेव है।

× × × ×

हमें अन्दर से भक्ति का पानी मिले और बाहर से तपस्या की धूप मिले तो हम भी पेड़ों जैसे हरे-भरे होजाएं। हम ज्ञान की दृष्टि से परिश्रम को नहीं देखते, इसलिये उसमें तकलीफ़ मालूम होती है। ऐसे लोगों के लिए भगवान का यह शाप है कि उनको आरोग्य और ज्ञान कभी मिलने वाला ही नहीं है।

× × × ×

माता की सेवा करनेवाला लड़का दुनिया भर की सेवा करता है—यह मेरी धारणा है।

× × × ×

सेवा के लिये हम विशाल क्षेत्र चाहते हैं, पर अगर असली सेवा करनी है, सेवामय वन जाना है, अपने को सेवा में खपा देना है, तो किसी देहात में चले जाइए।

× × × ×

वादविवाद में पड़ना हमारा काम नहीं। हम तो सेवा करते-करते ही खत्म हो जाएं। हमारे प्रचार-कार्य का सेवा ही विशेष साधन है। दूसरों के दोष वताने और अपने विचार सामने रखने का मोह हमें छोड़ देना चाहिये। माँ अपने वच्चे के दोष थोड़े ही वताती है, वह तो उसके ऊपर प्रेम की वर्षा करती है। उसके वाद फिर कहीं दोष वताती है। असर ऐसी ही प्रेममयी सेवा का होता है।

× × × ×

आत्म-परीक्षण से मन का, मौन से वाणी का, और कर्मयोग से शरीर का दोष झड़े विना आत्मा को आरोग्य नहीं मिलेगा।

× × × ×

ब्राह्मण का अर्थ है त्याग और साहस की साक्षात् प्रतिमा। मृत्यु के परले पार की खोज लेने के निमित्त जीवन की आहुति देनेवाला ब्राह्मण।

× × × ×

जव तक तकलीफ़ सहने की तैयारी नहीं होती तव तक फ़ायदा दिखने का नहीं। फ़ायदे की इमारत तकलीफ़ की नींव पर वनती है।

× × × ×

ऊँचा आदर्श सामने रखना और उसके लिए संयमी जीवन व्यतीत करना इसको में ब्रह्मचर्य कहता हूँ।

× × ×

आत्म-शक्ति का अनुभव हमें नहीं होता, क्योंकि कोई न कोई संकल्प करके उसे पूरा करने की आदत हम नहीं डालते। छोटे छोटे ही संकल्प या निश्चय किजिये और उन्हें कार्यान्वित किजिये तब आत्मशक्ति का अनुभव होने लगेगा।

× × × ×

निंदा करने से किसी का भी फ़ायदा नहीं होता। जो निंदा करता है, उसका मुंह खराब होता है और जिसकी निन्दा की जाती हैं, उसकी कोई उन्नति नहीं होती।

× × × ×

सच्चे हिन्दू में मुसलमान है और सच्चे मुसलमान में हिन्दू है। हम में पहिचानने भर की शक्ति होनी चाहिए।

× × × ×

धर्माचरण एक उपासना है। उपासना में विरोध की गुंजाइश नहीं। जैसे 'राम' और 'विठ्ठल' एक ही परमेश्वर की मूर्तियाँ है और इसलिए उनमें विशिष्टता होते हुए भी उनका विरोध नहीं है। वैसेही हिन्दूधर्म मुस्लिम धर्म इत्यादि एक ही सत्यधर्म की मूर्तियां हैं, इसलिए उनमें विशिष्टता होते हुए भी विरोध नहीं है। जो ऐसा देखता है वही वास्तव में देखता है।

× × × ×

धर्म का रहस्य जानने के लिये न तो कुरान पढ़ने की ज़रूरत है, न पुराण पढ़ने की। 'सारे धर्म भगवान के चरण हैं'। इतनी एक बात जान लेना बस है।

× × × ×

जिस देश से उद्योग गया, उस देश को भारी घुन लगा समझना चाहिये। जो खाता हैं, उसे उद्योग तो करना ही चाहिये फिर वह उद्योग

चाहे जिस तरह का हो। ....जिस घर में उद्योग की तालीम नहीं उस घर के लड़के जल्दी ही घर का नाश कर देंगे।

× × × ×

शिक्षण का कार्य कोई स्वतन्त्र तत्व उत्पन्न करना नहीं है किन्तु सुप्त तत्व को जाग्रत करना है।

× × × ×

विद्यार्थियों का शिक्षण इस प्रकार होना चाहिये कि उन्हें उसका वोध ही न हो, यानी स्वाभाविक रूप से होना चाहिये।

× × × ×

विद्यार्थी के भीतर तर्कशक्ति स्वभावतः होती है। शिक्षण का कार्य केवल ऐसे अवसर उपस्थित करना है जिससे उस तर्कशक्ति को समय समय पर खाद्य मिलता रहे। सारे शास्त्र, सब कलाऐं, तमाम सद्गुण मनुष्य में बीजतः स्वयंभू हैं। हम उस वीज को देख नहीं सकते। लेकिन वह दिखाई नहीं देता इसलिये उसका अभाव तो नहीं है ?

× × × ×

मोक्ष ब्रह्मचारी और काम व्यभिचारी है। इस प्रकार के ये दो सिरे हैं। धर्म कहेगा—"हमारा आदर्श ब्रह्मचर्य होना चाहिये, इसमें सन्देह नहीं। इस आदर्श के पालन का जोरों से यत्न करना चाहिये। जब काम बहुत ही भूकने लगे, तब धार्मिक विधि के अनुसार गृहस्थवृत्ति स्वीकार करके उसके आगे एकाध टुकड़ा डाल देना चाहिये। परन्तु वहां भी उद्देश्य तो संयम-पालन का ही होना चाहिये और फिर तैयारी होते ही श्रेष्ठ आश्रम में प्रवेश करके उससे छुटकारा पाना चाहिये।

× × × ×

ब्रह्मचर्य से संसार उत्सन्न (समाप्त) होगा—यह पाप के समर्थन में बोलने वाली लचर दलील है। संसार के उत्सन्न होने की फिक्र आप न करें। उसके लिए भगवान पर्याप्त है। ब्रह्मचर्य से सृष्टि नष्ट नहीं होगी बल्कि मुक्त होगी।

× × × ×

करना है तो ग़रीबी को अपने जीवन में आरम्भ कर देना चाहिये। घर में चक्की न हो तो दाखिल कीजिये। चरखा शरीर-परिश्रम के लिये गांधी जी ने बताया, जिसे बच्चा, बूढ़ा सब कोई चला सकता है। ग़रीबों से तन्मय होने की यही एक निशानी है।

✠ ✠ ✠ ✠

जो मनुष्य के साथ दयालुता का बर्ताव नहीं करता और पत्थर की मूर्ति की पूजा करता है, वह ढोंगी कहा जा सकता है।

✠ ✠ ✠ ✠

सेवा में वृत्ति जितनी निरहंकार रहेगी उतनी सेवा की कीमत बढ़ेगी। मैंने दस सेर सेवा की लेकिन चालीस सेर मेरा अहंकार रहा तो मेरी सेवा की कीमत १०/४० यानी १/४ हो गई। इसके विपरीत एक मनुष्य ने एक तोला भर सेवा की, लेकिन उसका अहंकार शून्य है तो उसकी सेवा की कीमत १/० तोला यानी अनन्त होगी।

✠ ✠ ✠

भगवान का वैभव बढ़ाना, यही चीज़ मानव-देह में करने लायक है। वाणी से भगवान का गुणगान करें, हाथों से उनकी सेवा करें और अपनी बुद्धि को शुद्ध बनालें। बुद्धि की शुद्धि के लिए भगवान की भक्ति से बढ़कर कोई भी साधन आज तक अनुभव में नहीं आया।

✠ ✠ ✠ ✠

किसी धर्म का किसी धर्म से विरोध नहीं है। सबका किसी से विरोध है तो वह अधर्म से। अधर्म का विरोध करने में सबको एक होना चाहिए।

✠ ✠ ✠ ✠

जीवन एक आज़माइश है।....मनुष्य की कसौटी करने के लिए ईश्वर ने उसको दुनिया में भेजा है। भगवान पैसेवालों को और पैसा देकर आज़माता है कि वह अपने पैसे का उपयोग कैसे करता है, ग़रीबों को मदद पहुँचाता है या नहीं। भगवान ग़रीब को ग़रीब रखकर आज़माता है कि वह हिम्मत हारता है या नहीं।

✠ ✠ ✠ ✠

जिसके दो बच्चे हैं, वह अपने तीन बच्चे हैं ऐसा समझे। यह तीसरा बच्चा यानी ग़रीब जनता। वह बच्चा दुनिया में पड़ा है इसके लिये अपनी सम्पत्ति का, बुद्धि का, समय का उतना हिस्सा दें तो सारा सवाल हल होजाता है। घर में अगर नया बच्चा हुआ तो शिकायत तो नहीं करते बल्कि अपने जीवन को उस तरह ढ़ाल लेते हैं, वैसे ही ग़रीब जनता के लिये हम करेंगे तो अपरिग्रह का अच्छा आरम्भ होगा और उसकी व्याख्या करने की जरूरत नहीं रहेगी।

× × × ×

माता बच्चे को उठाने के लिये नीचे झुकती है, वैसे ही हमें नीचे झुकना चाहिये और नीचे वालों को ऊपर उठाना चाहिये तभी विषमता मिटेगी, तभी सच्चा स्वराज्य आवेगा।

× × × ×

भक्ति-मार्गी भजन करते हैं, ध्यान योगी ध्यान में रमते हैं। ज्ञानी चिन्तन में मस्त हैं। पर ये सब ऐसा नहीं सोचते कि हमें रोज कुछ न कुछ खाने को लगता है तो कुछ पैदायश का काम भी करलें ताकि एक ही कर्म से चित्त-शुद्धि भी हो, भक्ति भी सधे और श्रमिकों का बोझ भी कुछ कम हो।

× × × ×

अगर हमें स्वराज्य को सम्पन्न बनाना है तो श्रम की प्रतिष्ठा भी बढ़ानी होगी। बढ़ई, प्रोफ़ेसर और न्यायाधीश के वेतन के भेद मिटाने होंगे। जिस तरह सूर्य सबको समान प्रकाश देता है, चन्द्र सबको समान रूप से शीतलता पहुँचाता है और पृथ्वी, हवा, पानी सबके लिये समान है वैसे ही आजीविका के साधन सबको समान रूप से मिलने चाहिए।

× × × ×

लोगों को डर लगता है और पूछते हैं कि सब समान होजायेंगे तो हम जो ऊँचे काम करने वाले हैं उनकी प्रतिष्ठा कैसे रहेगी ? मैं पूछता हूँ कि आप ने भगवान श्रीकृष्ण से तो ऊँचा काम नहीं किया है ? कृष्ण

से बढ़कर तो किसी ने हमें तत्त्वज्ञान नहीं दिया है? वह कृष्ण क्या करता था ? ग्वालों के बीच काम करता था, गौवें चराता था, घोड़ों के खरहरा करता था। धर्मराज के यहाँ यज्ञ में उसने जूठन उठाने का काम अपने लिये माँगा था। हिन्दुस्तान का किसान गीता भी नहीं जानता है, परन्तु आज पाँच हज़ार वर्ष हुए तब से वह गोपालकृष्ण की जय बराबर करता आरहा है। यह कैसे बना ? क्योंकि उन्होंने देखा कि गोपाल कृष्ण ने तत्त्वज्ञान भी दिया, राज भी किया और मज़दूरी का काम भी किया।

× × × ×

वाणिज्य को गीता के अर्थ में अगर हम धर्म मान लेते हैं तो मुनाफ़े का सवाल ही नहीं उठता। किसान और आम जनता हमारी मालिक हैं और हमें मालिक की सेवा करनी है। इसलिये किसान या मज़दूर जो कुछ निर्माण करता है उसके वितरण में हमें सिर्फ़ मेहनताना लेना है और हर वक्त यह सोचना है कि देश की सम्पत्ति कैसे बढ़ सकती है। आठ घंटे काम करके मज़दूर केवल एक रूपया पावे और व्यापारी एकसो, तो यह । धर्मयुक्त व्यापार में न मुनाफ़ा होना चाहिये न घाटा। तराज़ू के पलड़े की तरह दोनों बाजू समान होनी चाहिये।

× × × ×

दीनों की सेवा अगर उनकी दीनता क़ायम रखकर की जाती है तो वह ऊँचे दर्जे की सेवा नहीं कही जासकती। जिस सेवा से उनकी दीनता मिटती है, वही सेवा सच्ची है।

× × × ×

अगर हम मन्दिरों में अपने हरिजन भाइयों को प्रवेश देते हैं तो उन पर कोई उपकार नहीं करते, बल्कि भगवान के भक्तों को भगवान से दूर रखने के पाप से हम छुटकारा पाजाते हैं।

× × × ×

हमारा स्वराज्य वैसा ही होगा जैसा हमारा 'स्व' होगा। इसलिये अगर स्वराज्य का आनन्द लूटना है तो स्व को परिशुद्ध करने की जरूरत है।

× × × ×

भू-दान-यज्ञ

अगर हम किसी को एक रोज भी खाना खिलाते हैं तो बहुत पुण्य मिलता है। एक रोज के अन्नदान का अगर इतना मूल्य है तो एक एकड़ जमीन का जिससे एक आदमी की सारी ज़िंदगी बसर हो सकती है, कितना मूल्य होगा ? इसलिए दरिद्रनारायण के वास्ते सब लोगों से कुछ-न-कुछ मिलना ही चाहिए। इसी का नाम यज्ञ है। इसलिए हरएक शख्स से मैं कहता हूं कि भाई, मुझे कुछ-न-कुछ देदो। —विनोबा

अधिकांश लोग आज भूख से व्यथित हैं, खाने के लिए उनके पास पर्याप्त अन्न नहीं, रहने के लिए घर नहीं, काम करने के लिए साधन नहीं यह शोचनीय स्थिति आखिर कबतक रहेगी ? उसे क्यों रहने दिया जाय ? और रहने कौन देगा ?

भूदान-यज्ञ सब कर सकते हैं

आज सबका पहला फर्ज है कि गांव-गांव में भूमिहीनों के लिए अधिकार-पूर्वक ज़मीन की मांग करें। जिनके पास जरूरत से ज़्यादा ज़मीनें हैं, वे कर्तव्य-बुद्धि से उसमें से अधिकांश हिस्सा बे-ज़मीन वालों को समर्पित करें।

जिनके पास थोड़ी भी ज़मीन है, वे भी बे-ज़मीन वालों के प्रति अपनी सक्रिय सहानुभूति दिखलाने के लिए उसमें से कुछ ज़मीन उनके लिए अवश्य दें।

जिनके पास ज़मीन नहीं है पर धन दौलत है, वे ज़मीन खरीद कर दें, कुंए बनवा दें, बैल जोड़ी, हल बीज आदि साधनों का प्रबंध करदें।

जिनके पास ज़मीन और धन दोनों न हों, वे श्रम-दान दें, पड़त ज़मीन को दुरुस्त कर दें। भूदान के कार्यक्रमों में पैदल यात्रा आदि करके सहयोग दें। वकील वर्ग गरीब किसानों के सही मुकदमों की मुफ्त में पैरवी करें। लेखक भूदान पर लेख कविता आदि साहित्य लिखें तथा पढ़े लिखे लोग प्रोफ़ेसर, मास्टर आदि गांवों में जाकर लोगों को व्याख्यानों द्वारा समझावें और सर्वोदय साहित्य का प्रचार करें।

विनोबाजी का अगला क़दम—भूमिहीन जागृत हों

गांव-गांव में सभा करके ज़मीन की मांग करें

केवल ज़मीनवालों को समझाने से काम नहीं बनेगा, भूमिहीनों को भी उनका हक़ समझाना होगा और गांव गांव में सभा करके मांग करनी होगी कि जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी परमेश्वर की पैदा की हुई है, उन पर सब का हक़ है, उसी तरह ज़मीन भी परमेश्वर की पैदा की हुई है, वह किसी खास की मिल्कियत नहीं हो सकती। भूमि हमारी माता है और उसकी सेवा करने का हमारा हक़ है।

मां और बच्चे में कितना स्नेह-संबंध है, पर फिर भी भूख लगने पर बच्चा जब रोता है, तब माँ का ध्यान उसकी तरफ़ जाता है और वह उसे दूध पिलाती है। उसी तरह भूमिहीनों को आवाज़ उठानी चाहिये।

विनोबाजी क्या चाहते हैं ?

(१) **भूदान यज्ञ से साम्य योग**—पहले कदम के बतौर अपने परिवार के एक हिस्से की ज़मीन दें फिर पूरा का पूरा गाँव अपनी सारी ज़मीन समर्पण कर एक ही कुटुम्ब बने।

(२) **क्रियात्मक उपासना**—नित्य हर एक अपने घर पर प्रार्थना करे और सप्ताह में कम से कम एक बार सब धर्म के लोग स्त्री-पुरुष मिलकर सामुहिक प्रार्थना करें।

(३) **जीवन-शोधन**—अपने आचार-विचार, साधन और व्यवहार शुद्ध रक्खें। शरीरश्रम का व्रत लें। दुःखी लोगों की सेवा करें।

(४) **विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था**—गाँव में होने वाले कच्चे माल से गाँव में ही पक्का माल बनावें। जहाँ तक सम्भव हो अपने ज़रूरत की चीज़ें गाँव में ही पैदा करें। खादी उत्पत्ति को ग्रामोद्योग का राजा समझें। हाथचक्की, तेलघानी आदि का उपयोग करें।

भूमि-दान दो—भूमि-दान दो

प्रभु ने देकर जन्म सभी को, एक समान संवारा है।
पृथ्वी, पानी, पवन सभी पर, अधिकार हमारा है॥
भेद भाव मिट गया, वह रही विमल प्रेम की धारा है।
भूमि-दान दो भूमि-दान दो, यही हमारा नारा है॥
सत्य अहिंसा द्वारा होंगे, सारे काम हमारे।
दो भूमि-दान तुम प्यारे, भारत के राज दुलारे॥

भूमिदान-यज्ञ के नारे

१. ज़मीन किसकी	जोतेगा उसकी।
२. क़दम बढ़ेंगे कैसे	क्रान्ति से, पर शान्ति से।
३. यह होगा कैसे	समझाकर, प्रेम से।
४. जमीन पर सब का हक है	ज़माने की माँग है।
५. जनता दुःख न सहेगी	धरती बँटकर रहेगी।
६. हवा पानी सभी की	वैसे ज़मीन हर एक की।
७. हमारे गांवमें भूमिविहीन	कोई न रहेगा।
८. हमारे गांव में बे-ज़मीन	कोई न रहेगा।

आज हमारा हिन्दुस्तान सामाजिक असन्तोष और आर्थिक विषमता के जाल में फंस गया है। इसमें से सही सलामत बच निकलने के लिए ही यह भूदान-यज्ञ आन्दोलन है। अगर हमारे यहाँ समाज-रचना में परिवर्तन नहीं होता है तो हम नष्ट होजायेंगे।

देश को हिंसात्मक क्रांति से बचाने के लिए अपनी आवश्यकता से अधिक जमीनें भूमि-हीनों को देकर पुण्य के भागी बनिये।

पेट भर खाओ, पर पेटी भर मत रखो

भूखे को एक दिन खाना खिलाने से पुण्य होता है, पर रोज़ रोज़ कौन खिला सकता है? इसलिए गरीबों को काम दो, ज़मीन दो और काम करने के साधन दो।

भूमिदान-यज्ञ

आज इक फ़कीर की जो भूमि की पुकार है,
पुकार है यह दीन की, यह देश की पुकार है,
पुकार दीन-हीन की न अब भुलायेंगे।
भूमि—दान—यज्ञ हम सफल बनायेंगे॥
बापु की थी जो कल्पना वह सत्य की स्वराज्य की,
यह संत जोड़ने चला लड़ी वह राम-राज्य की,
सन्त के क़दम पै हम क़दम बढ़ायेंगे। भूमिदान....
आज है चतुर दिशा में गूंज साम्य-वाद की,
कत्ल से, कानून से, खूनी क्रान्ति-नाद की,
किन्तु हम तो करुणा का ही पथ बनायेंगे। भूमिदान....
प्रेम से हो भूमिदान, प्रेम से ही क्रान्ति हो,
विश्व के कलह मिटें, फिर सदा की शान्ति हो,
हम मनुज को शान्ति की सुधा पिलायेंगे। भूमिदान....
जिसके भूमि है नहीं उसे भी भूमि चाहिये,
सबको वायु चाहिये सबको आयु चाहिये,
अब किसी के भाग को न हम दबायेंगे। भूमिदान....
भूमिदान मांगना न भीख का प्रकार है,
जिसके भूमि है नहीं उसे भी स्वाधिकार है,
भूमि देके अपना फ़र्ज़ हम निभायगे। भूमिदान....
सबके पास हो धरा, सभी के पास धाम हो,
सबको अन्न वस्त्र हो, सभी के पास काम हो,
हम सदा सभी का ही उदय मनायेंगे। भूमिदान....
सत्य शान्ति की दिशा में यह नया प्रयोग है,
सत्य का प्रयास है, यह एक शुभ संयोग है,
उठ पड़ो ऐ भारतीय, जग जगायेंगे। भूमिदान....

—रघुराजसिंह

भू-दान-यज्ञ के दान-पत्र का नमूना

आचार्य विनोबाजी द्वारा भू-दान-यज्ञ के आवाहन पर

मैं/हम .... गांव .... तहसील ....

ज़िला .... सूबा .... का/के निवासी मेरी/हमारी मालकी

की कुल .... एकड़ ज़मीन में से, जिन पर पूरा क़ानूनी हक़ मेरा/

हमारा है, खुश्की ज़मीन .... एकड़ .... डेसिमल ....

सर्वे नंबर ...., तरी ज़मीन .... एकड़ ....

डेसिमल .... सर्वे नंबर .... गांव .... नंबर ....

तहसील .... ज़िला .... सूबा .... वाली

ज़मीन पूज्य विनोबाजी द्वारा शुरू किये गये भू-दान-यज्ञ में विचार-पूर्वक, अपनी राजीखुशी से दान दे रहा हूं/रहे हैं। इस दान में दी हुई ज़मीन पर आइन्दा मेरा/हमारा या मेरे/हमारे खानदान या वारिसान का कोई हक़ या दावा नहीं रहेगा। यह ज़मीन ग़रीबों की भलाई के लिये पूज्य विनोबाजी चाहें जिस तरह उपयोग में ला सकते हैं।

मुक़ाम .... तारीख ....

दाता के हस्ताक्षर ....

गवाह	दाता का पूरा नाम व पता
१	....
२	....

डाकखाना .... ज़िला

सम्पत्ति-दान-यज्ञ के दान-पत्र का नमूना

पूज्य विनोबाजी,

आपने भारतीय परम्परा के अनुसार आर्थिक क्रान्ति की अहिंसक प्रक्रिया को संपूर्ण रूप देने की दृष्टि से अब लोगों से भूमि के अलावा अपनी सम्पत्ति का भी षष्ठांश देने की माँग की है। भूमि-दान-यज्ञ में जो लोग भूमि न होने के कारण विशेष सहयोग नहीं दे सकते थे, उनके लिये भी अब आपने रास्ता खोल दिया है। दरिद्रनारायण के लिए किये गये आपके इस आवाहन पर में अपनी आय का..............वाँ हिस्सा आपको अर्पित करता हूँ तथा हर साल आपके निर्देशानुसार मैं इसका विनियोग सार्वजनिक कार्य के लिये करूगा।

अपनी आय का वार्षिक हिसाब आपको या आपके प्रतिनिधि या जिस समिति को आप अधिकार दें, उसको मैं नियमित भेजता रहूँगा।

ऊपर लिखे हुए हिस्से की सारी रक़म को सुरक्षित रखने तथा आपके निर्देशानुसार उसको खर्च करने की ज़िम्मेदारी मैं मान्य करता हूँ।

अपने नियम का साक्षी अन्तर्यामी रूप में मैं ही स्वयं हूँ तथा मुझे अपनी अन्तरात्मा से वफ़ादार रहना है।

ईश्वर मुझे बल देगा।

मेरी सम्पत्ति आदि का ब्योरा साथ में दिया है।

तारीख.................... हस्ताक्षर..

पूरा नाम..

सम्पत्ति का ब्योरा..

आय का ब्योरा...वार्षिक/मासिक

.........वें हिस्से की रक़म.................................. " "

सूचना—जो भाई भूमि-दान या सम्पत्तिदान या दोनों तरह के दान देकर महा पुण्य के भागीदार बनना चाहें, वे इन नमूनों की नकल बड़े कागज़ पर करके साफ़-साफ़ अक्षरों में दान-पत्र भरकर विनोबाजी के पास (पता—सर्व सेवा संघ भूदान कार्यालय, पटना ३) या सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम (वर्धा) के पते पर भेजदें।